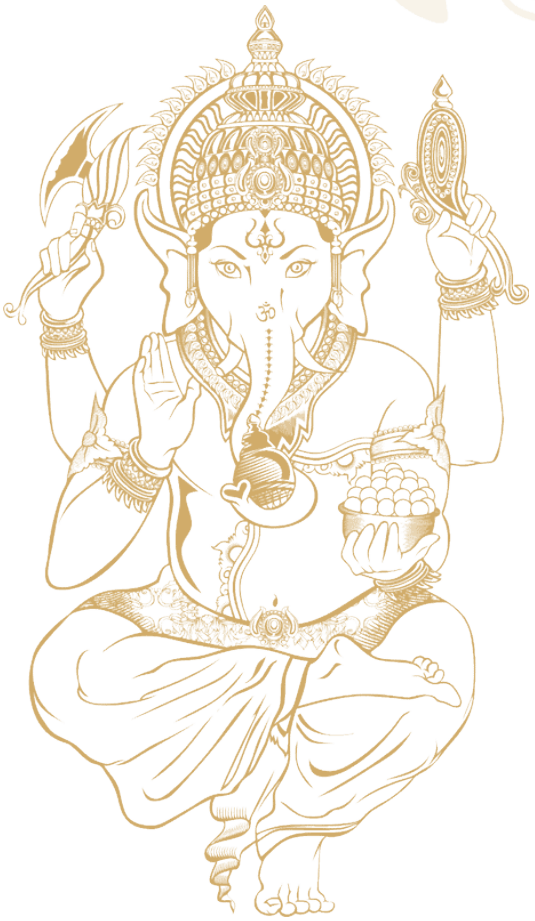

Chitra

20 Mar 2026

06:13 PM

Charkhi Dadri

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121686001**

तिथि 20/03/2026 **समय** 18:13:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Charkhi Dadri **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:30
अक्षांश 28:37:00 उत्तर **रेखांश** 76:16:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:24:56 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	05:40:19 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:07:30 घं	योनि	गज
सूर्योदय	06:29:23 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	18:35:58 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2083	वश्य	जलचर
शक संवत	1948	वर्ग	सिंह
मास	चैत्र	युँजा	पूर्व
पक्ष	शुक्ल	हंसक	जल
तिथि	2	जन्म नामाक्षर	चा-चांदनी
नक्षत्र	रेवती	पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
योग	ब्रह्म	होरा	गुरु
करण	कौलव	चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी		योगिनी	
बुध 6वर्ष 3मा 13दि		उल्का 2वर्ष 2मा 19दि	
बुध		उल्का	
20/03/2026		20/03/2026	
02/07/2032		08/06/2028	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		20/03/2026
	00/00/0000	पिंगला	08/06/2026
	20/03/2026	धान्या	08/12/2026
राहु	18/07/2027	भ्रामरी	08/08/2027
गुरु	23/10/2029	भद्रिका	08/06/2028
शनि	02/07/2032		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:26:26	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	गुरु	---	0:00			
सूर्य			05:41:25	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	मित्र राशि	1.63	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			25:04:10	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	सम राशि	1.28	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	19:53:50	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	सम राशि	0.99	मातृ	भ्रातृ	वध
बुध	व		14:16:11	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	सम राशि	1.02	पुत्र	ज्ञाति	वध
गुरु			21:00:18	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.34	भ्रातृ	धन	मित्र
शुक्र			23:15:16	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	उच्च राशि	1.32	अमात्य	कलत्र	जन्म
शनि		अ	09:53:30	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.44	ज्ञाति	आयु	अतिमित्र
राहु	व		14:41:20	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		14:41:20	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

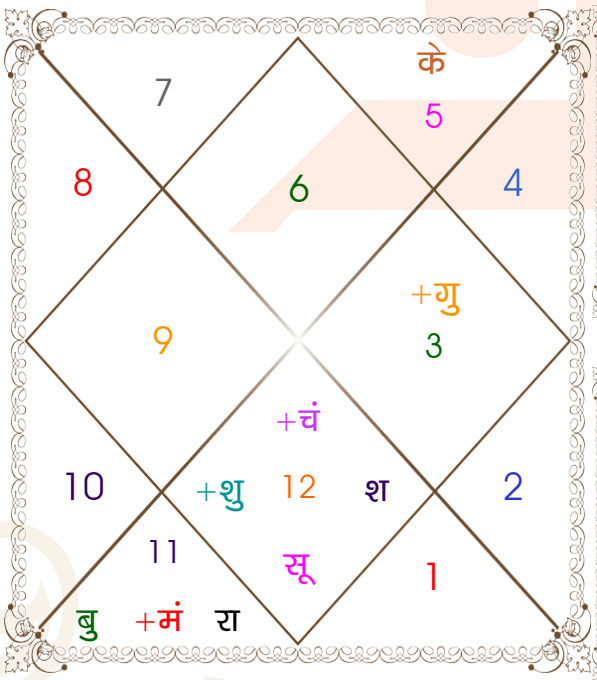

चन्द्र कुंडली

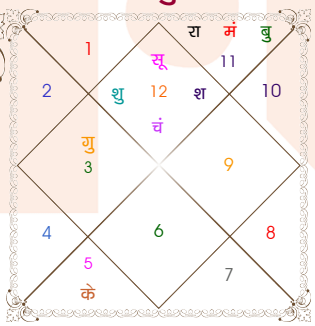

नवमांश कुंडली

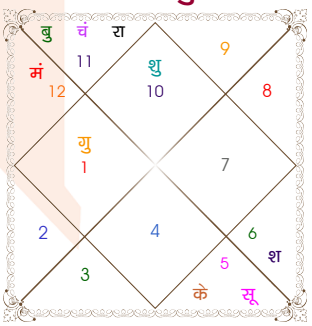

सर्वाष्टकवर्ग

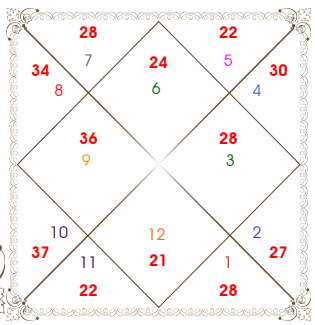

दशमांश कुंडली

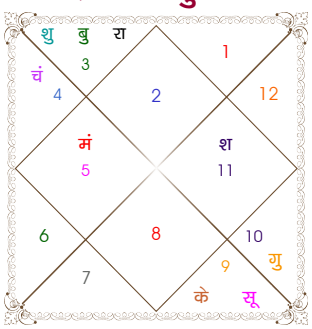

नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि गज, वर्ण ब्राहमण, गण देव, वर्ग मेष तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "च" या "चा" अक्षर से होगा। यथा चन्द्रावती आदि

आप नैसर्गिक रूप से अच्छे स्वभाव से युक्त रहेंगी तथा अन्य लोगों के साथ आपका व्यवहार विनम्र रहेगा। इससे सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। जीवन में विविध प्रकार के धनैश्वर्य से आप सम्पन्न रहेंगी एवं सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। आप एक संयमशील महिला होंगी तथा समस्त इन्द्रियों को वश में रखने में सफल रहेंगी। आप में ईमानदारी का भाव सदैव विद्यमान रहेगा एवं अपने समस्त कार्यों को इसी गुण से सम्पन्न करेंगी। साथ ही व्यापारादि में भी आप निर्मल मन से लाभ अर्जित करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमान महिला होंगी एवं एक धनाढ्य महिला के रूप में समाज में जानी जाएंगी।

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप के सभी शारीरिक अंग पूर्ण सुन्दरता से युक्त रहेंगे। आप समाज में सभी लोगों के मध्य समान रूप से लोकप्रियता अर्जित करेंगी तथा सभी लोगों को समान रूप से सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आप शौर्योचित गुणों से भी युक्त रहेंगी तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। आपका मन भी निर्मल रहेगा एवं अन्य जनों से आपका निस्वार्थ स्नेह तथा मित्रता का व्यवहार रहेगा।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आप कई प्रकार के कार्यों को करने में निपुण रहेंगी तथा अपने सभी महत्वपूर्ण कार्यों को प्रवीणता से सम्पन्न करेंगी। आप नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने में सफल होंगी एवं एक विदुषी के रूप में सामाजिक प्रतिष्ठा तथा ख्याति अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त धन वैभव से भी आप सुसम्पन्न रहकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

आपके जानु में कोई निशान या चिन्ह भी अंकित हो सकता हैं। आप सलाह देने आदि कार्यों में अत्यन्त ही दक्ष होंगी फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप सुन्दर पति तथा गुण सम्पन्न पुत्रों से सर्वथा युक्त रहेंगी तथा आपके मित्र भी सद्गुणों से सुसम्पन्न तथा शिक्षित होंगे। आप दृढ़ निश्चयी महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही आपके पास धन सम्पति भी प्रायः स्थिर रूप से विद्यमान रहेगी।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

आप समुद्र से उत्पन्न द्रव्यों तथा शंख मोती आदि रत्नों से सुसम्पन्न रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी अर्जित होगा। जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति की धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आपका सुन्दर तथा नवीन वस्त्रों के प्रति अत्याधिक ही अनुराग रहेगा एवं इनको प्राप्त करने के लिए आप अत्यन्त ही लालयित भी रहेंगी। इसके अतिरिक्त शारीरिक रूप से आप मध्यम कद की महिला रहेंगी।

जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारूदृष्टिः।

द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रकट करेंगी तथा इसका अधिक मात्रा में उपयोग करेंगी। अपने पति के ऊपर आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनसे आप पूर्ण रूपेण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। अतः आपका गृहस्थ जीवन अत्यन्त सुखमय एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक उच्चकोटि की महिला होंगी एवं समाज में पूर्ण रूप से सम्मानित रहेंगी। आप कृतज्ञता के गुण से भी सुशोभित रहेंगी एवं अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा हार्दिक आभार भी व्यक्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकांश महत्वपूर्ण कार्यों पर भाग्यबल से ही सफलता अर्जित करेंगी।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्धान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा संयमित जीवन व्यतीत करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक चतुर तथा बुद्धिमती महिला होंगी एवं अपने अधिकांश कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमतापूर्ण ढंग से ही सम्पन्न करेंगी। जल क्रीड़ा में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा इससे आपको अत्यन्त ही प्रसन्नानुभूति प्राप्त होगी। आप स्वच्छ बुद्धि से युक्त रहेंगी एवं धोखा किसी से भी नहीं करेंगी।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप उदरपोषण संबंधी कार्यों में अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। साथ ही कभी कभी लाभमार्ग अवरूद्ध होने पर आर्थिक संकट का भी आपको सामना करना पड़ेगा। आप कान्तिमय शरीर से सुशोभित रहेंगी एवं इससे आपके सौन्दर्य में नित्य अभिवृद्धि होगी। आप पिता से भी धन सम्पति अर्जित करेंगी एवं उसका जीवन में सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। आप में साहस का भाव भी रहेगा एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप में सन्तोष का भाव भी विद्यमान रहेगा।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से गम्भीर होंगी तथा वीरता एवं पराक्रम के गुणों से सर्वदा सुशोभित

रहेंगी। समाज में आप एक गणमान्य तथा प्रतिष्ठित महिला रहेंगी तथा सभी सामाजिक लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आप में कृपणता का भाव भी रहेगा। अतः धन संचय में अधिक रूचिशील रहेंगी। कुल या परिवार में आप प्रिय रहेंगी तथा सभी परिवारिक जनों से आप यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। सेवाकार्यों में भी आप हमेशा यत्नशील रहेंगी एवं इनको सम्पन्न करके आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी। आपको शीघ्र गति से चलना पसन्द होगा। आपका चाल चलन भी श्रेष्ठ रहेगा तथा अन्य जनों के लिए अनुकरणनीय तथा प्रशंसनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार अपने आकर्षक सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व तथा विद्वता के कारण आप समाज में सम्मानित महिला होंगी तथा कई अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देव गण में जन्म लेने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त मधुर तथा प्रिय रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे सर्वथा प्रसन्न रहेंगे। आपकी बुद्धि भी सरलता के गुण से युक्त होगी तथा अपने विचारों को सादगी से प्रकट करना एवं अन्य की बातों को सुगमता से ग्रहण करना आपकी मुख्य विशेषता रहेगी। आपको अल्प मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना अच्छा लगेगा। दूसरे लोगों के गुणों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा एवं अच्छे बुरे की पहचान करने में भी आप सफल रहेंगी। साथ ही श्रेष्ठ लोगों द्वारा प्रतिपादित उत्तम गुणों से सुशोभित रहेंगी। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य तथा सम्पति से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

देखने में आप अत्यन्त ही सुन्दर होंगी एवं आपके मन में दानशीलता की प्रवृति विद्यमान रहेगी जिसका आप जीवन में यथाशक्ति अनुपालन करती रहेंगी। आप बुद्धिमान होंगी एवं हमेशा सादगीयुक्त जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगी अनावश्यक भौतिकता से आप दूर ही रहना चाहेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक महान विदुषी के रूप में भी समाज में ख्याति अर्जित करेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में

भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गज योनि में उत्पन्न होने के कारण आप उच्चाधिकारी वर्ग में प्रिय तथा आदरणीय रहेंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित होता रहेगा। आप एक बलशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वभुजबल से ही सिद्ध करने में सफल रहेंगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। आप किसी उच्चाधिकारी की सहयोगी या स्वयं भी कोई उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफल हो सकती हैं। आप एक उत्साही महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को उत्साह पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगी।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता

करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले होगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में चिन्ता, शरीर में अस्वस्थता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए। साथ ही वृहस्पतिवार के भी नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान से कम से कम 16000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपकी समस्त चिन्ताएं दूर होंगी एवं समस्त अशुभ प्रभाव समाप्त होकर अन्यत्र शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।